

जिंदगी भर की मेहनत से बनाई पार्टी का यह हश्र देखकर बेहद आहत है मुलायम

लोकसभा चुनाव में मोदी मैजिक ने सबको किनारे कर दिया। लगातार मिली तीन करारी हार के बाद अखिलेश की सियासी काबलियत पर “घर” के भीतर और “बाहर” दोनों जगह से उंगलियां उठने लगी हैं।



राजनीति 'बैसाखी' के सहारे नहीं चलती है। यह बात सपा प्रमुख अखिलेश यादव से बेहतर कौन समझ सकता है। 2014 में जब समाजवादी पार्टी पांच सीटों पर सिमट गई थी, तब ऐसा लगा कि यह मोदी लहर का असर है। मगर, 2017 के विधान सभा चुनावों में भी यही इतिहास दोहराया गया। जब अखिलेश ने राहुल गांधी से हाथ मिलाया था तो लग रहा था कि दो युवाओं की जोड़ी विधानसभा चुनाव में बढ़ा उलटफेर करेगी, लेकिन ऐसा हो नहीं पाया, तब 2018 सपा के लिए कुछ खुशियां लेकर आया। दो करारी हारों के बाद बीते वर्ष तीन लोकसभा सीटों पर हुए उप-चुनावों में अखिलेश ने राष्ट्रीय लोकदल और बसपा के साथ जुगलबंदी करके तीनों ही सीटों पर जीत का परचम फहराया तो भाजपा के होश उड़ गए। उसे लोकसभा चुनाव की चिंता सताने लगी। उधर, अखिलेश ने 2017 में राहुल का पकड़ा हाथ छोड़कर बहनजी की पार्टी से गठबंधन कर लिया। दोनों आधी-आधी सीटों पर लड़े। माहौल ऐसा बनाया गया, मानो यह गठबंधन बीजेपी का सफाया कर देगा। उधर, कांग्रेस महासचिव प्रियंका वाड़ा के यूपी के चुनावी मैदान में कूदने से यह अटकलें लगाने लगी थीं कि कांग्रेस जीते भले नहीं, लेकिन भाजपा को नुकसान जरूर पहुंचाएगी। परंतु दूसरी तरफ बीजेपी के अध्यक्ष अमित शाह एक ही रट लगाए थे कि हम 73 से एक सीट अधिक जीत सकते हैं कम नहीं। बदली सियासी परिस्थितियों में अमित शाह का यह दावा उनका विश्वास कम अहंकार ज्यादा लग रहा था, लेकिन जब नतीजे आए तो सब चौंक गए। बीजेपी को भले 74 सीटें नहीं मिलीं, लेकिन 64 सीटों पर मिली कामयाबी भी छोटी नहीं थी। वहीं गठबंधन पूरी तरह से ध्वस्त दिखाई दिया। खासकर समाजवादी पार्टी के लिए मायावती से गठबंधन का प्रयोग पूरी तरह से फलापन साबित हुआ।

लोकसभा चुनाव में मोदी मैजिक ने सबको किनारे कर दिया। लगातार मिली तीन करारी हार के बाद अखिलेश की सियासी काबलियत पर 'घर' के भीतर और 'बाहर' दोनों जगह से उंगलियां उठने लगी हैं। और तो और जिन चाचा रामगोपाल यादव के चलते टीपू (अखिलेश) ने पिता मुलायम सिंह और चाचा शिवपाल यादव तक से बगावत की थी, वह रामगोपाल भी आरोप लगा रहे हैं कि पार्टी में टिकटों का बंटवारा ठीक से नहीं हुआ। बसपा से गठबंधन को लेकर कई मौकों पर नाराजगी जता चुके सपा संरक्षक मुलायम सिंह यादव ने भी लखनऊ में समाजवादी पार्टी कार्यालय पहुंच कर हार की समीक्षा की और लोकसभा चुनाव में मिली करारी हार के लिए पार्टी पदाधिकारियों को जिम्मेदार ठहराते हुए जमकर फटकार लगाई। मुलायम ने कहा कि पदाधिकारी लापरवाह रहे और जनता की नब्ब नहीं पकड़ सके। मुलायम के अधिकतर सवालों पर पार्टी के नेता बगलें झांकते रहे। एक-दो लोगों ने हार के कुछ तर्क गिनाए भी तो उन्हें खरी-खरी सुननी पड़ी।

मुलायम सबसे अधिक दुखी इस बात से थे कि उनके ही गढ़ में उनके परिवार के लोगों को हार झेलनी पड़ी। कन्नौज में डंपल यादव, फिरोजबाद में अक्षय यादव और बदरगढ़ में धर्मदेव यादव की हार से मुलायम काफी आहत हुए। वह इसे समाजवादी पार्टी के लिए शुभ संकेत नहीं मानते हैं। इसीलिए वह पार्टी नेताओं को उलाहना दे रहे थे कि तुम लोग तो घर की सीटें भी नहीं बचा पाए। बताते हैं कि मुलायम की नाराजगी केवल नतीजों के लिए नहीं, गठबंधन को लेकर भी थी। इस मौके पर गठबंधन पर भी सवाल खड़े हुए। कुछ नेताओं का आरोप था कि हार की बुनियाद बसपा से गठबंधन में सीटों के बंटवारे के समय से ही पड़ गई थी। सपा नेताओं का कहना था कि चुनाव में जिन सीटों पर जीतने

की उम्मीद थी, उनमें से कई सीटें बंटवारे में बसपा के पास चली गईं, जबकि सपा के खाते में ऐसी सीटें आ गईं, जहां पार्टी ने कभी जीत हासिल नहीं की थी।

सपा को मिली करारी शिकस्त के बाद पार्टी कार्यालय पहुँच कर मुलायम ने पार्टी के नेताओं को तो खूब खरी-खोटी सुनाई, लेकिन उन्होंने बैठक के दौरान अखिलेश की कलास के खिलाफ कोई तीखी टिप्पणी नहीं की। परंतु मुलायम का उदास मन बता रहा था कि कहीं न कहीं मुलायम को भाई शिवपाल के सहारे की भी कमी महसूस हो रही थी, जिनके सहारे मुलायम ने कई बार सत्ता की सीढ़ियां चढ़ी थीं, लेकिन इन चुनावों में वह समाजवादी पार्टी के लिए मुसोबत का सबब बने रहे। शिवपाल के चलते अखिलेश की छवि काफी दागदार हुई। एक तरह से शिवपाल से अखिलेश की नफरत और दूसरी तरफ बसपा सुप्रीमो मायावती से दोस्ती ने भी समाजवादियों का मनोबल तोड़ा। नाम न छापने की शर्त पर कुछ सपा नेता कहते हैं जब अखिलेश मायावती और अजित सिंह से हाथ मिला सकते थे तो शिवपाल तो घर के सदस्य थे, उनके साथ इतना बैर ठीक नहीं था। इसी प्रकार मुलायम की इच्छा जानने के बाद भी अखिलेश का अपने छोटे भाई प्रतीक की पत्नी अर्पणा यादव को लोकसभा चुनाव के लिए टिकट नहीं दिया जाना भी कुछ समाजवादियों को रास नहीं आया।

उधर, शिवपाल यादव अपने भतीजे अखिलेश की अगुवाई वाली समाजवादी पार्टी को नुकसान पहुंचाने के लिए कमर कसे नजर आए। उन्होंने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष तौर पर सपा को नुकसान भी पहुंचाया। इसी के चलते रामगोपाल यादव के बेटे अक्षय यादव को हार का सामना करना पड़ा। अक्षय के खिलाफ शिवपाल यादव भी चुनाव लड़े थे। अक्षय यादव को कुल 4,65,686 वोट मिले थे और भाजपा के डॉ. चंद्रसेन जादवी

को 4,94,050 वोट मिले थे। इस तरह से अक्षय यादव 28,364 वोट से चुनाव हार गए। वहीं, शिवपाल यादव को 91,651 वोट मिले। अगर यह वोट अक्षय को मिलता तो यहां की तस्वीर कुछ और होती।

कहा यह जा रहा है कि समाजवादी पार्टी से निकल कर अपनी खुद की पार्टी प्रगतिशील समाजवादी पार्टी बनाकर फिरोजबाद से चुनाव लड़ने वाले मुलायम सिंह यादव के छोटे भाई शिवपाल को अपनी हार का गम कम बल्कि अक्षय यादव के फिरोजबाद पर जीत नहीं दर्ज कर पाने की खुशी ज्यादा है। यह इसलिए कहा जा रहा है, क्योंकि समाजवादी पार्टी से बाहर करवाने में अक्षय के पिता रामगोपाल का बड़ा हाथ रहा। रामगोपाल को शिवपाल कर्ताई पसंद नहीं है। इसका कारण कुछ भी हो सकता है, लेकिन बताया जाता है कि शिवपाल के खिलाफ अखिलेश को भड़काने में रामगोपाल ने बड़ी भूमिका निभाई है। जिसकी वजह से शिवपाल भी अब रामगोपाल को देखना पसंद नहीं करते हैं।

खैर, सियासत हमेशा 'बलि' मांगती है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि 'बलि' के डर से लोग दुबक कर बैठ जाएं। अखिलेश भी धीरे-धीरे हार से उबर रहे हैं। सपा सूत्रों के अनुसार लोकसभा चुनाव में हार के बाद अखिलेश यादव पार्टी को फिर उसी तरह सभी वर्गों का संतुलन साधकर मजबूत करना चाहते हैं, जैसा कभी मुलायम सिंह यादव के समय पार्टी हुआ करती थी। पार्टी के पास तब हर वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले चेहरे थे और इन चेहरों की समाज में भी स्वीकार्यता थी। अखिलेश ने इस चुनाव में हार के लिए भी पार्टी के पुराने नेताओं से फीडबैक लिया है।

सपा में अब संगठनात्मक तौर पर बड़े बदलाव की तैयारी की जा रही है। सबसे पहले बड़ा कदम उठाते हुए अखिलेश ने समाजवादी पार्टी के मीडिया पैलल को भंग कर दिया है। आगे प्रदेश अध्यक्ष से लेकर जिलाध्यक्षों तक को हटाने व फंटेड संगठनों को भंग किए जाने की चर्चा तेजी से चल रही है। बताया जा रहा है कि समाजवादी युवजन सभा, समाजवादी छात्रसभा, समाजवादी लोहिया वाहिनी और मुलायम सिंह यूथ ब्रिगेड के साथ ही संगठन की कई इकाइयों का नये सिरे से गठन करने पर विचार शुरू हो रहा है। पार्टी कार्यालय में अखिलेश यादव द्वारा पूर्व मंत्री ओमप्रकाश सिंह को बुलाने और नया दायित्व सौंपे जाने की भी सुगबुगाहट है। अखिलेश द्वारा रिपोर्ट मांगे जाने के बाद कई लोगों पर कार्रवाई होना तय माना जा रहा है।

लम्बोलुआब यह है कि अखिलेश को हार के लिए अपनी पार्टी के अन्य नेताओं और कार्यकर्ताओं पर उंगली उठाने से पूर्व अपने

गिरेबा में भी झांक कर देखना होगा। अखिलेश ने भी चुनाव में गलतियां कम नहीं की हैं। आजम खान जैसे उनके नेताओं ने भी महिलाओं की मर्यादा को तार-तार किया, लेकिन अखिलेश त्रुटिकरण की सियासत के चलते मौन साधे रहे।

पिता की बात नहीं मानने पर ज्या हश्र होता है, अखिलेश इसके सबसे बड़े उदाहरण हैं

कुछ वर्षों पहले की ही बात है जब समाजवाद अथवा समाजवादी पार्टी का नाम आता था तो मुलायम सिंह का चेहरा अनायास ही आंखों के सामने उभर कर आ जाता था। मुलायम सिंह वह नाम था जो अपने बल पर सियासत की लम्बी यात्रा करते हुए शून्य से शिखर तक पहुंचे थे। अपनी समाजवादी पार्टी को खून-पसोने की मेहनत से खड़ा किया था। मुलायम ने लगभग साठ सालों तक अनवरत राजनीति के थपेड़े झेलकर सियासत में यह मुकाम बनाया था। वह तब तक देश की राजनीति पर भूमकेतु की तरह चमकते रहे, जब तक कि उन्होंने स्वयं अपने पुत्र अखिलेश यादव को उचराधिकारी के रूप में आगे नहीं किया था। मुलायम सिंह के बारे में यहां तक कहा गया कि वह कायदे से हिंदी भी नहीं बोल पाते थे जिसकी जरूरत एक अदद बड़े राजनेता को हमेशा रहती है, फिर भी उन्होंने एक पार्टी बनाई, उसे यहां तक पहुंचाया।

सियासी नजरिए से देश के सबसे महत्वपूर्ण सूबे में उनकी धाक जम गई, लेकिन सिर्फ इसी आधार पर मुलायम सिंह के पूरे सियासी सफर का आकलन नहीं किया जा सकता है। उनकी राजनीति हमेशा औरों के लिए एक बड़ी पहली बनी रही। एक सिरे से देखने पर लगता था कि उच्च प्रदेश का यह यदुवंशी खुद में बुरी तरह से उलझा हुआ रहता था। दूसरे सिरे से दिखाए है कि उन्होंने बड़ी चतुराई से पूरी राजनीतिक जमात को उलझा कर रखा था। उनकी यही राजनीतिक सफलता असाधारण की श्रेणी में आती थी। पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह कहते थे यह छोटे कद का बड़ा नेता है। आगे चलकर छोटे कद के बड़े नेता मुलायम सिंह यादव ने चौधरी चरण सिंह की पूरी राजनीतिक विरासत पर कब्जा कर लिया था। चरण सिंह के पुत्र अजित सिंह को सियासत के हाथिये पर पहुंचाने में मुलायम सिंह की बड़ी भूमिका रही। इस तरह की तमाम छोटी-छोटी बातें मुलायम सिंह की राजनीति का अभिन्न हिस्सा थीं। मुलायम सिंह के बारे में मशहूर है कि उनमें आला दर्जे की राजनीतिक चतुराई, हद दर्जे का अवसरवाद, साधियों के साथ खड़ा रहने का जीवत, परिहारवाद की बीमारी और राजनीति में सफलता के लिए सबसे जरूरी खास किस्म की मोटी चमड़ी जैसी खासियतें प्रचुरता में मौजूद थीं।

मुलायम के बारे में मशहूर था कि वो उत्तर प्रदेश में किसी भी जनसभा में कम से कम पचास लोगों को नाम लेकर मंच पर बुला सकते थे। समाजवाद का यह पुरोधा कभी गंव रहे सैफर्ड के अखाड़े में तैयार हुआ था। वहीं से उन्होंने पहलवानी के साथ राजनीति के पैरों भी सीखे। मुलायम सिंह की सियासत का पहला अध्याय 60 के दशक में शुरू हुआ था। यह कांग्रेस विरोध का दौर था तब से अब तक वो पांच बार लोकसभा के सदस्य, तीन बार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री और एक बार देश के रक्षा मंत्री रह चुके हैं। यह रिकॉर्ड उनकी सफल राजनीतिक जीवन की कहानी है।

मुलायम सिंह एक जनाधार वाले नेता हैं। विचारधारा के स्तर पर मुलायम सिंह के विचार हमेशा संदेहास्पद रहे। जिस लोहिया को वे अपना राजनीतिक गुरु और रहनुमा